ISSN 0973-2616

NIScPR
सीएसआईआर–निस्पर

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

प्रगति, विकास और आशा
सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 12 अंक 6 www.csir.res.in जून 2024

डॉ. जितेंद्र सिंह ने केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में कार्यभार संभाला

डॉ. जितेंद्र सिंह ने नई दिल्ली में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) मुख्यालय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का पदभार ग्रहण किया। केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के तुरंत बाद, डॉ. जितेंद्र सिंह ने छह विज्ञान मंत्रालयों / विभागों और उनके सचिवों की एक संयुक्त बैठक बुलाई जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पहले 100 दिनों की कार्य योजना पर चर्चा की। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि पहले 100 दिनों की कार्य योजना का उद्देश्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, के नेतृत्व में भारत की प्रगति को जारी रखना है।

कार्यभार संभालने के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में दुनिया को नेतृत्व प्रदान करने के लिए

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत एक अग्रणी राष्ट्र है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों में स्टार्टअप्स को विशेष प्राथमिकता दी गई थी जो 2014 में 350 स्टार्टअप्स से लेकर 110 से अधिक यूनिकॉर्न के साथ 2024 में 1.5 लाख स्टार्टअप्स तक के सांख्यिकीय आंकड़ों से स्पष्ट है। उन्होंने कहा कि उक्त अवधि के दौरान जैव अर्थव्यवस्था (बायो-इकॉनमी) भी कई गुना बढ़ गई है और इस अवधि में भी यह प्रगति निर्बाध गति से जारी रहेगी। डॉ. सिंह ने यह रेखांकित किया कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के संरक्षण ने नई प्रौद्योगिकियों को प्रस्तुत करने में सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे सड़क निर्माण प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) संचालित स्वास्थ्य-देखरेख (हेल्थकेयर-जैसी नवाचार प्रौद्योगिकियां देश के नागरिकों के लिए जीवन में सुगमता लेकर आई हैं तथा आम नागरिकों के जीवन को एक नया आयाम प्रदान किया है।

उन्होंने इस मिशन को अगले 20 वर्षों तक आगे बढ़ाने का विश्वास व्यक्त किया जब भारत 2047 में प्रवेश करेगा। उन्होंने कहा कि भारत जब अपनी स्वतंत्रता का शताब्दी वर्ष मनाएगा तब नवप्रवर्तन (इनोवेशन) बुनियादी ढांचे के विकास का हिस्सा बनकर एक नया कीर्तिमान स्थापित करने में सफल होगा।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि अपने दूसरे कार्यकाल के अंत में सरकार ने राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) कानून प्रस्तुत किया, जो भारत को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अग्रणी राष्ट्र बनाता है।

डॉ. सिंह ने अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की प्रगति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग और भारत के पहले मानव अंतरिक्ष उड़ान गगनयान मिशन मिशन की दिशा में लगातार प्रगति के साथ अंतरिक्ष में अपनी उपलब्धियों के कारण भारत का सम्मान बढ़ा है। उन्होंने आगे कहा कि देश में हमारे पास वैज्ञानिक कौशल की कोई कमी नहीं है, उन्होंने नीति निर्माण पक्ष की ओर से इस दिशा में विशेष ध्यान देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

डॉ. सिंह ने बताया कि जैव –अर्थव्यवस्था (बायो-इकोनॉमी), नील-अर्थ-व्यवस्था (ब्लू-इकोनॉमी) और अंतरिक्ष अर्थ–व्यवस्था (स्पेस इकोनॉमी) में नवाचार (इनोवेशन) प्राथमिकता रहेगी।

केंद्रीय मंत्री ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सभी सचिवों की उपस्थिति में समीक्षा बैठक की। इस अवसर पर भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (पीएसए) डॉ. अजय कुमार सूद, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सचिव प्रोफेसर अभय करंदीकर एवं जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव डॉ. राजेश गोखले के साथ भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन (इसरो) और वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के वरिष्ठ वैज्ञानिक भी इस बैठक में उपस्थित हुए।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने वरिष्ठ अधिकारियों को प्रधानमंत्री जी की 100 दिनों की योजना के बारे में जागरूक किया।

उन्होंने देश की प्रगति में अपनी दक्षता और योगदान बढ़ाने के लिए सीएसआईआर का पुनरुद्धार करने की योजना पर भी चर्चा की।

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-एस्पायर योजना के अंतर्गत 300 महिला वैज्ञानिकों को तीन वर्षों के लिए अनुसंधान अनुदान की घोषणा की

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, परमाणु ऊर्जा विभाग और अंतरिक्ष विभाग राज्य मंत्री तथा कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-एस्पायर योजना के अंतर्गत 300 महिला वैज्ञानिकों को तीन वर्षों के लिए अनुसंधान अनुदान प्रदान किए जाने की घोषणा की।

डॉ. सिंह ने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नवाचार का उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'ईज ऑफ लिविंग' के दृष्टिकोण के अनुरूप नागरिकों को सशक्त बनाने के लिए होना चाहिए। डीएसआईआर और सीएसआईआर के कामकाज की समीक्षा करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने सीएसआईआर-एस्पायर योजना की सराहना की, जो महिला वैज्ञानिकों को समर्थन प्रदान करने वाले सरकार के प्रयासों को दर्शाते हैं। पिछले वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शुरू की गई एस्पायर योजना महिला वैज्ञानिकों को अनुसंधान अनुदान प्रदान करने के लिए एक विशेष आह्वान है। इसके लिए लगभग 3000 प्रस्ताव प्राप्त हुए थे। अनुसंधान समितियों ने स्क्रीनिंग और समीक्षा के पश्चात क्षेत्रवार समर्थन प्रदान करने के लिए कुल 301 अनुसंधान प्रस्तावों की सिफारिश की थी।

डॉ. सिंह ने 'वन वीक वन लैब' पहल की सफलता का उल्लेख करते हुए टीम को इसे आगे बढ़ाने और 'वन वीक वन थीम' पहल की तर्ज पर काम करने का निर्देश दिया। सीएसआईआर का 'वन वीक वन लैब' (ओडब्ल्यूओएल) अभियान पूरे देश में स्थित 37 सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के नेटवर्क की विविध विरासतों, विशिष्ट नवाचारों और तकनीकी सफलताओं का प्रदर्शन करता है, जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विविध डोमेन में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि "हमारा लक्ष्य विभिन्न उद्योगों और एमएसएमई, स्टार्ट-अप और अन्य हितधारकों के बीच मजबूत संपर्क स्थापित करने का होना चाहिए, न कि इसे प्रयोगशाला की दीवारों तक ही सीमित रखना चाहिए।

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने स्थायी हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए वाणिज्यिक खेती के साथ-साथ समुद्री शैवाल मिशन को आगे बढ़ाने और विकसित करने का भी निर्देश दिया। उन्होंने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि भारत प्रतिदिन 774 टन बायोमेडिकल कचरे का उत्पादन करता है। उन्होंने सीएसआईआर के प्रयासों की सराहना की जो रोगजनक जैव चिकित्सा अपशिष्ट को मूल्य वर्धित मृदा योजक में परिवर्तित करते हुए पर्यावरण को स्वच्छ एवं प्रदूषणमुक्त बनाता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने टीम सीएसआईआर को ई-टिलर, 108-पेटल लोटस और पर्पल मिशन जैसे सभी सफल प्रयासों के लिए भी बधाई दी। उन्होंने सीएसआईआर के वैज्ञानिकों को फिनोम इंडिया-सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेजबेस (पीआई-सीएचईसीके) को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग मॉडल के साथ एकीकृत करने का भी निर्देश दिया, जिससे लक्षित नैदानिक और रोगनिरोधी प्रौद्योगिकियों के विकास को सक्षम बनाया जा सके तथा इस प्रकार से देश और शायद वैश्विक स्तर पर सटीक चिकित्सा का मार्ग प्रशस्त किया जा सके। उन्होंने महिलाओं में ऑस्टियोआर्थराइटिस की प्रगति और उम्र बढ़ने से उत्पन्न होने वाली अन्य जटिलताओं को रोकने के लिए सहायक/सुधारात्मक उपायों के विकास के प्रारंभिक चरण में भारतीय महिला फुट एंथ्रोपोमेट्री और चलने से जुड़े दोषपूर्ण पैटर्न की पहचान करने के लिए व्यापक डेटाबेस के प्रगति की भी जानकारी प्राप्त की।

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस अवसर पर जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि “बायो-मैन्युफैक्चरिंग और बायो-फाउंड्री भारत के भविष्य की जैव अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाएंगे और हरित विकास को बढ़ावा देंगे। इस बैठक को संबोधित करते हुए श्री सिंह ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत की जैव-अर्थव्यवस्था पिछले 10 वर्षों में 13 गुना बढ़ी है, जो 2014 में 10 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2024 में 130 बिलियन डॉलर से ज्यादा हो चुकी है।

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत में अब औद्योगिक विकास और उद्यमिता का एक सक्षम इकोसिस्टम बनकर तैयार हुआ है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत के वैश्विक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए पिछले 'लेखानुदान' में जैव विनिर्माण और जैव फाउंड्री को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष योजना की परिकल्पना की गई थी।

डॉ. सिंह ने कहा कि इस योजना से आज के उपभोक्ता विनिर्माण प्रतिमान को पुनरुत्पादक सिद्धांतों पर संचालित करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि यह पहल जैव-स्टार्ट-अप और जैव-अर्थव्यवस्था के पूरक के लिए बायोडिग्रेडेबल पॉलिमर, बायो-प्लास्टिक, बायो-फार्मास्यूटिकल्स और बायो-एग्री-इनपुट जैसे पर्यावरण के लिए अनुकूल विकल्प प्रदान करेगा।

उन्होंने वैज्ञानिकों और अधिकारियों को निर्देश दिया कि हमें इस गति को निरंतर बनाए रखना होगा और किसानों व कृषि-उद्यमियों को बढ़ावा देना होगा और उन्हें सशक्त बनाना होगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने अंत में बायो ई-3 अर्थात जैव-अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और रोजगार प्राप्त करने के लिए काम करने का एक मूलमंत्र प्रदान किया। उन्होंने स्वदेशी प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के विकास पर भी जोर दिया तथा डीबीटी को अनुसंधान संस्थानों, औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास और स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के बीच अनुसंधान के एकीकरण हेतु प्रेरित किया।

इस बैठक में डॉ. राजेश गोखले, सचिव, जैव प्रौद्योगिकी विभाग और डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक और दोनों विभागों के अधिकारी भी उपस्थित हुए।

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

सीएसआईआर-निस्पर द्वारा योग महोत्सव का आयोजन

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) नई दिल्ली ने अपने पूसा परिसर में ‘योग महोत्सव’ का उद्घाटन किया।

यह ‘योग महोत्सव’ 18 से 21 जून तक मनाया गया जिसमें व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण को प्रोत्साहन देने में योग के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं। ये कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 के एक भाग के रूप में आयोजित किए गए। योग महोत्सव के पहले दिन ‘स्वयं एवं समाज के लिए योग’ विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. सुजीत भट्टाचार्य, मुख्य वैज्ञानिक ने योग के विभिन्न पहलुओं पर श्रोताओं के साथ अपने विचार साझा किए। उन्होंने मुख्य रूप से बढ़ते हीटवेव से स्वयं को बचाने एवं और उचित मात्रा में योगाभ्यास पर जिए दिया। इस महोत्सव के उद्घाटन दिवस पर आयुष मंत्रालय के मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के प्रसिद्ध योग चिकित्सक डॉ. लक्ष्मी कंधन द्वारा "कार्यस्थल पर योग" के बारे में एक ज्ञानवर्धक सत्र आयोजित किया गया।

डॉ. कंधन ने अपनी गहन विशेषज्ञता के साथ, प्रचलित स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने और इसके चिकित्सीय अनुप्रयोगों में योग की क्षमता का गहन अन्वेषण किया। उन्होंने योग, व्यावसायिक स्वास्थ्य के बारे में प्रचलित मिथकों और गलत धारणाओं पर प्रकाश डाला और वैज्ञानिक एवं प्रमाणित सूचनाओं को साझा किया। इसके अलावा डॉ. कंधन ने कार्यस्थल पर गलत शारीरिक मुद्राओं को ठीक करने के तरीकों पर प्रकाश डाला, जो उनके संबोधन का मुख्य विषय था। उन्होंने अपने सम्बोधन के दौरान श्रोताओं को विभिन्न मुद्राओं का अभ्यास भी कराया तथा उससे जुड़े स्वास्थ्य लाभ के बारे में विस्तार से बताया।

डॉ. कनिका मलिक, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक एवं समन्वयक, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समिति, सीएसआईआर निस्पर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। महोत्सव के अगले दिन योग पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कार्मिकों ने अधिक संख्या में प्रतिभागिता की। संस्थान के सत्संग विहार परिसर में भी कार्मिकों को योगाभ्यास कराया गया। कार्यक्रम के समापन पर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया और सभी कार्मिकों को योगामैट भी वितरित किए गए।

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अंतर्गत एक घटक प्रयोगशाला है। यह विज्ञान संचार, नीति अनुसंधान और जनता के बीच वैज्ञानिक जागरूकता को प्रोत्साहन देने के लिए समर्पित है।

सीएसआईआर-सीमैप द्वारा विकसित सेनेटरी पैड की तकनीक का हस्तांतरण

सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधीय एवं संगन्ध पौधा संस्थान (सीमैप), लखनऊ द्वारा विकसित हर्बल उत्पादों को आम-जन मानस तक पहुँचाने तथा बृहद रूप से व्यापार उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम (एनआरडीसी), नई दिल्ली के प्रतिनिधियों के साथ सीएसआईआर-सीमैप में बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में एनआरडीसी के कमोडोर अमित रस्तोगी, सीएमडी; एन. जी. लक्ष्मीनारायण, डीजीएम (बीडी); अमिताभ मिश्रा (डीजीएम बीडी एंड पीपी) व सीएसआईआर-सीमैप के निदेशक डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी व वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में डॉ. प्रबोध कुमार त्रिवेदी, निदेशक, सीएसआईआर-सीमैप ने बताया कि सीएसआईआर-सीमैप द्वारा विकसित हर्बल उत्पादों की तकनीकियों को राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, नई दिल्ली के माध्यम से भी व्यवसायीकरण किया जाएगा।

बैठक के पश्चात सीएसआईआर-सीमैप द्वारा विकसित सेनेटरीपैड की तकनीक को एनआरडीसी के माध्यम से तनुजा भटनागर (मेसर्स एसएस क्रिएसन्स टोक, राजस्थान) को हस्तांतरित किया गया। मेसर्स एसएस क्रिएसन्स टोक की प्रमुख ने बताया कि इस उत्पाद के 70% उत्पादन को गरीब महिलाओं को लागत मूल्य पर दिया जाएगा। जिससे इसके कारण होने वाली बहुत सी बीमारियों से बचा जा सके। कंपनी के खर्चों को पूरा करने के लिए इसके उत्पादन का 30% व्यावसायिक रूप से विपणन किया जाएगा। निदेशक, सीएसआईआर-सीमैप ने बताया कि यह तकनीक समाज में होने वाली बीमारियों को भी कम करेगी।

इस अवसर पर सीएसआईआर-सीमैप के डॉ. ए.एस. नेगी, डॉ. सुदीप टंडन, डॉ. अनिर्बन पाल, डॉ. करुणा शंकर, डॉ. मनोज सेमवाल, डॉ. डी. एन. मणि, डॉ. संजय कुमार, डॉ. राजेश कुमार वर्मा, डॉ. पी. के. राऊत, डॉ. राम सुरेश शर्मा, डॉ. सौम्या पाठक, डी. पी. मिंडाला, प्रियंका सिंह व मनीष आर्या आदि उपस्थित थे। बैठक का संचालन डॉ. आर. के. श्रीवास्तव (प्रमुख, व्यापार विकास विभाग) ने किया।

सीएसआईआर- निस्पर तथा ग्लोबल हेल्थ स्ट्रैटेजीज के संयुक्त तत्वाधान में 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार' पर कार्यशाला का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) ने ग्लोबल हेल्थ स्ट्रैटेजीज (जीएचएस) के सहयोग से 11 जून 2024 को पूसा परिसर, नई दिल्ली में 'विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार' पर एक कार्यशाला आयोजित किया।

यह कार्यशाला एक अनूठी पहल थी, जिसमें विभिन्न पृष्ठभूमि के विज्ञान संचारकों, वैज्ञानिकों और शिक्षकों को आमंत्रित किया गया था ताकि विज्ञान संचार के विभिन्न पहलुओं यथा- वैज्ञानिक और शोधकर्ता मीडिया के साथ कैसे बातचीत करें और तकनीकी साक्ष्य और शोध को सरल शब्दों में संप्रेषित करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का कैसे बेहतर उपयोग करें, इत्यादि पर व्यापक विचार-विमर्श किया जा सके।

इस अवसर पर प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक समझ को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने निरंतर विकास सुनिश्चित करने के लिए भविष्य में भी इस तरह की पहल जारी रखने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला। आईसीएमआर-आरएमआरसी गोरखपुर के वरिष्ठ सलाहकार, वैश्विक स्वास्थ्य रणनीतियां एवं पूर्व प्रमुख, नीति एवं संचार प्रभाग, आईसीएमआर मुख्यालय और निदेशक, डॉ.रजनीकान्त श्रीवास्तव ने विज्ञान संचार में वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करने के लिए सीएसआईआर-निस्पर और आईसीएमआर के सहयोगात्मक प्रयासों की सराहना की। शोध से जुड़ी संचार आवश्यकताओं की रूपरेखा, भारत में मीडिया परिदृश्य को समझना, विज्ञान संचार के पत्रकारों के साथ संचार, मीडिया इंटरैक्शन में निपुणता प्राप्त करना तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को वायरल बनाना, सोशल मीडिया के लिए संचार और सोशल मीडिया सामग्री में निपुणता प्राप्त करना जैसे विषयों पर इस कार्यशाला में विस्तार के साथ चर्चा की गई। सीएसआईआर-निस्पर भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अंतर्गत एक घटक प्रयोगशाला है।

सीएसआईआर-आईआईपी में तीसरे भारतीय विश्लेषणात्मक कांग्रेस (आईएससी) सम्मेलन का आयोजन

सीएसआईआर-भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (सीएसआईआर-आईआईपी) में तीसरे भारतीय विश्लेषणात्मक कांग्रेस (आईएससी) का उद्घाटन किया गया। यह एक तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सह प्रदर्शनी (आईएससी-2024) कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम का आयोजन सीएसआईआर-आईआईपी और इंडियन सोसाइटी ऑफ एनालिटिकल साइंटिस्ट (आईएसएएस दिल्ली चैप्टर) की ओर से संयुक्त रूप से किया गया।

इस सम्मेलन का विषय 'हरित परिवर्तनों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका' थी।

इस अवसर पर लद्दाख विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. के. मेहता ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए लद्दाख में नव विकसित शैक्षणिक बुनियादी संरचना की भूमिका का अवलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने डीएसटी, डीबीटी और अन्य वित्त पोषण एजेंसियों से प्राप्त अनुसंधान निधि के माध्यम से लद्दाख विश्वविद्यालय में हाल ही में विकसित उन्नत अनुसंधान सुविधाओं की जानकारी दी। सीएसआईआर -आईआईपी के निदेशक डॉ. हरिंदर सिंह बिष्ट ने नई उन्नत विश्लेषणात्मक सुविधाओं के महत्व और ऊर्जा परिवर्तन में उनकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर प्रो. रजनीश कुमार, प्रोफेसर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास एवं एसएसबी पुरस्कार विजेता ने" सीओ2 कैप्चर और सीक्वेस्ट्रेशन कार्बन कैप्चर उपयोग और सीक्वेस्ट्रेशन एवं भारत में नेट जीरो लक्ष्यों के लिए इसकी प्रासंगिकता " पर एक व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर ऊर्जा और ऊर्जा उपकरणों (ईईडी) में सीएसआईआर की पहल और विषयगत उपलब्धियों को 'वन वीक वन थीम '(ओडब्ल्यूओटी) कार्यक्रम के माध्यम से प्रदर्शित करने के बारे में चर्चा की गई।

ईईडी सत्र पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों, नवीकरणीय और गैरपारंपरिक ऊर्जा / ऊर्जा प्रणालियों और ऊर्जा भंडारण और उपकरणों पर केंद्रित था।

इस-तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ने विश्लेषणात्मक विज्ञान में उद्योगों, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों के लिए इस क्षेत्र में प्रचलित और आगामी समाधानों को प्रस्तुत करने का एक मंच प्रदान किया। सम्मेलन में पांच तकनीकी सत्र थे, जिनमें प्रख्यात वक्ताओं की वार्ता,

शोधकर्ताओं की प्रस्तुतियां और विशेष और पूर्ण सत्र शामिल थे।

उद्घाटन समारोह के दौरान इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल स्टेटिस्टिक्स - दिल्ली चैप्टर के अधिकारी डॉ. जी. एस. कपूर, डॉ. जे. क्रिस्टोफर, डॉ. रवीन्द्र कुमार और डॉ. राजकुमार सिंह मौजूद थे। सम्मेलन में इंडियन ऑयल कारपोरेशन लिमिटेड, भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड और एचएमईएल जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-रुड़की, यूपीईसी, दून विश्वविद्यालय, बार्क, पंजाब विश्वविद्यालय आदि जैसे संस्थानों के 250 से अधिक प्रतिनिधियों ने प्रतिभागिता की।

सीएसआईआर ने 'फेनोम इंडिया' परियोजना के अंतर्गत 10,000 नमूने एकत्रित करने का लक्ष्य प्राप्त किया

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने अपनी अभूतपूर्व विशाल स्वास्थ्य निगरानी परियोजना, 'फेनोम इंडिया-सीएसआईआर हेल्थ कोहोर्ट नॉलेजबेस' (पीआई-चेक) के पहले चरण के सफल समापन की घोषणा की। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को यादगार बनाने के लिए, सीएसआईआर ने 3 जून को गोवा के राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (सीएसआईआर-एनआईओ) में एक विशेष कार्यक्रम 'फेनोम इंडिया अनबॉक्सिंग 1.0' का आयोजन किया। इस अवसर पर सीएसआईआर- जीनोमिकी और समवेत जीवविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ. सौविक मैती, सीएसआईआर-राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (सीएसआईआर-एनआईओ) के निदेशक डॉ. सुनील कुमार सिंह, सीएसआईआर-आईजीआईबी के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शांतनु सेनगुप्ता, सीएसआईआर-आईजीआईबी के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह और सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर इंटेलिजेंट सेंसर्स एंड सिस्टम्स के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वीरेन सरदाना उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों में शामिल थे।

मीडिया को संबोधित करते हुए सीएसआईआर- जीनोमिकी एवं समवेत जीवविज्ञान संस्थान के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. शांतनु सेनगुप्ता ने कहा कि यह भारतीय स्वास्थ्य सेवा के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। उन्होंने बताया कि भारत में कार्डियो-मेटाबोलिक बीमारियों के मामले बहुत अधिक होने के बावजूद, भारतीय आबादी में इतनी अधिक घटनाओं के कारण पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। उन्होंने कहा, "पश्चिम के जोखिम कारक भारत के जोखिम कारकों के समान नहीं हैं। एक कारक जो किसी विशेष व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है, वह दूसरे व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण हो, यह आवश्यक नहीं होता है। इसलिए हमारे देश में एक ही तरह की अवधारणा लागू नहीं हो सकती है। उन्होंने बताया कि पहली बार, कार्डियो-मेटाबोलिक बीमारी, विशेष रूप से मधुमेह, लीवर रोग और हृदय रोगों के लिए एक उन्नत पूर्वानुमान मॉडल विकसित करने के उद्देश्य से एक अखिल भारतीय स्तर पर अध्ययन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस तरह का अध्ययन महत्वपूर्ण है क्योंकि इन बीमारियों में आनुवंशिक और जीवनशैली दोनों ही प्रकार के कारक होते हैं जो इसके जोखिम को बढ़ाते हैं।

उन्होंने कहा कि यह अध्ययन 10,000 नमूनों के अपने लक्ष्य को पार करने में सफल रहा है। उन्होंने अन्य संगठनों से भी इसी तरह के नमूना संग्रह अभियान शुरू करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, "मान लीजिए, हमें लगभग 1 लाख या 10 लाख नमूने मिल जाते हैं, तो इससे हम देश में सभी प्रमुख मापदंडों को फिर से परिभाषित करने में सक्षम हो जाएंगे।" उन्होंने यह भी बताया कि सीएसआईआर ने नमूना संग्रह के लिए एक लागत प्रभावी मानक संचालन प्रक्रिया विकसित की है। इस परियोजना को 7 दिसंबर 2023 को लॉन्च किया गया था। इस 'पीआई-चेक' परियोजना का उद्देश्य भारतीय आबादी में गैर-संचारी (कार्डियो-मेटाबोलिक) रोगों के जोखिम कारकों का आकलन करना था। इस अनूठी पहल में पहले से ही लगभग 10,000 प्रतिभागियों को नामांकित किया गया था, जिन्होंने व्यापक स्वास्थ्य डेटा प्रदान करने के लिए स्वेच्छा से प्रतिभागिता की। इन प्रतिभागियों में 17 राज्यों और 24 शहरों के सीएसआईआर कार्मिक, पेंशनभोगी और उनके पति/पत्नी शामिल हैं। एकत्र किए गए डेटा में नैदानिक प्रश्नावली, जीवनशैली और आहार संबंधी आदतें, एंथ्रोपोमैटिक माप, इमेजिंग/स्कैनिंग डेटा और व्यापक जैव रासायनिक और आणविक डेटा सहित

कई पैरामीटर शामिल हैं।

भारतीय आबादी में कार्डियो मेटाबोलिक विकारों के बढ़ते जोखिम और घटनाओं के पीछे छिपी प्रणाली को समझना और इन प्रमुख बीमारियों के जोखिम स्तरीकरण, रोकथाम और प्रबंधन के लिए नई रणनीतियां विकसित करना महत्वपूर्ण है। वर्तमान में, इनमें से अधिकांश जोखिम पूर्वानुमान एल्गोरिदम कोकेशियन आबादी के महामारी विज्ञान संबंधी डाटा पर आधारित हैं और इस बात के प्रमाण हैं कि वे जातीय विविधता, विभिन्न आनुवंशिक संरचना और आहार संबंधी आदतों सहित जीवनशैली पैटर्न के कारण भारतीय आबादी के लिए बहुत सटीक नहीं हो सकते हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि भारत-विशिष्ट जोखिम पूर्वानुमान एल्गोरिदम विकसित किए जाएं।

फेनोम इंडिया परियोजना पूर्वानुमानित, व्यक्तिगत, सहभागी और निवारक स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से सटीक चिकित्सा को आगे बढ़ाने के लिए सीएसआईआर की प्रतिबद्धता का उदाहरण है। भारतीय आबादी के अनुरूप एक व्यापक फेनोम डेटाबेस तैयार करके, परियोजना का उद्देश्य पूरे देश में इसी तरह की पहल को उत्प्रेरित करना है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि जोखिम पूर्वानुमान एल्गोरिदम अधिक सटीक हों और भारत के विविध आनुवंशिक और जीवन शैली परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करें।

सीएसआईआर-एनबीआरआई में बोगनविलिया महोत्सव का आयोजन

सीएसआईआर- राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ने हाल ही में बोगनविलिया महोत्सव का आयोजन किया। सीएसआईआर-एनबीआरआई द्वारा के. एन. कौल ब्लॉक लॉन में आयोजित इस महोत्सव में डॉ. राधा रंगराजन, निदेशक, सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुईं । इस अवसर पर डॉ. राधा रंगराजन ने बोगेनविलिया के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रकाश डालते हुए कहा कि "बोगेनविलिया का नाम सेलर लुईस डी. बोगेनविले के नाम पर रखा गया था। उन्होंने ने बताया कि बोगनवेलिया की खोज सबसे पहले फ्रांसीसी वनस्पतिशास्त्री फिलिबर्ट कॉमर्सन ने रियो डी जेनेरियो, ब्राजील में 1760 के दशक में की थी।

इस महोत्सव में पी. के त्रिवेदी, निदेशक, सीएसआईआर-केन्द्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा संस्थान सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने इस एक दिवसीय पुष्प महोत्सव में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बोगनविलिया के चटक रंग हमारे दिल और दिमाग को तरोताजा कर देते हैं। उन्होंने बताया कि इस पौधे को बहुत कम देखभाल और रखरखाव की आवश्यकता होती है और इस पौधे का यह गुण हमें जलवायु-प्रतिरोधी विशेषताओं का पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

इस महोत्सव में सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित श्री सत्य नारायण साबत, महानिदेशक, क्राइम ब्रांच, क्राइम इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट (सीबी-सीआईडी), लखनऊ ने कहा कि लखनऊ में सौंदर्यीकरण अभियान में बोगनविलिया का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान में इस पौधे को शामिल किया जाना चाहिए। श्री साबत पुरस्कार वितरण के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अंत में एनबीआरआई के निदेशक ने कहा कि यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपनी फूलों की खेती और कृषि प्रौद्योगिकियों को प्रयोगशाला से किसानों तक ले जाएं ताकि उनकी आय और आजीविका में सुधार हो सके। बोगनविलिया की अनूठे नामों वाली दो दर्जन से अधिक किस्में प्रदर्शित की गईं। इस महोत्सव के संयोजक डॉ. एस.के. तिवारी, मुख्य वैज्ञानिक ने बताया कि हमने संस्थान द्वारा विकसित दो दर्जन से अधिक बोगनविलिया किस्में प्रदर्शित की हैं जिनमें बेगम सिकंदर , शुभ्रा , अर्जुन , अर्चना, मैरी पामर स्पेशल, लॉस बानोस इस महोत्सव के मुख्य आकर्षण रहे। उन्होंने बताया कि यह तीसरा बोगनविलिया महोत्सव है। इसकी शुरुवात वर्ष 2022 में की गई थी। इस महोत्सव में कुल 19 प्रदर्शकों ने 46 प्रविष्टियों के साथ भाग लिया। महोत्सव में काफी अधिक संख्या में लोगों ने प्रतिभागिता की।

सीएसआईआर-एनजीआरआई ने परमाणु खनिज निदेशालय (एएमडी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनजीआरआई), हैदराबाद ने भारत के खनिज अन्वेषण प्रयासों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए परमाणु खनिज अन्वेषण और अनुसंधान निदेशालय (एएमडी), हैदराबाद के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते का उद्देश्य भारत में विभिन्न खनिज बेल्टों में यूरेनियम अन्वेषण के लिए हेलीबोर्न सर्वेक्षण करना है।

सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक डॉ. प्रकाश कुमार और श्री धीरज पांडे, निदेशक, एएमडी, के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। । यह सहयोग यूरेनियम भंडार की खोज और पहचान को बढ़ाने के लिए उन्नत भूभौतिकीय सर्वेक्षण तकनीकों का लाभ उठाने में एक उल्लेखनीय कदम है, जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

सीएसआईआर-एनजीआरआई भारत का एकमात्र अनुसंधान एवं विकास संगठन है जिसने पहले राष्ट्रीय खनिज सुरक्षा के लिए हेलीबोर्न सर्वेक्षण किए हैं। ये सर्वेक्षण खनिज संसाधनों के सटीक मानचित्रण और आलेखन में सहायक सिद्ध हुए हैं। हेलीबोर्न सर्वेक्षणों के अलावा, सीएसआईआर-एनजीआरआई भारत के खनिज बेल्टों को व्यापक रूप से चित्रित करने के लिए एकीकृत भूभौतिकीय सर्वेक्षण भी करता है।

डॉ. प्रकाश कुमार, निदेशक, सीएसआईआर -एनजीआरआई ने इस सहयोगपूर्ण समझौता ज्ञापन के प्रति अपनी आशा व्यक्त करते हुए कहा कि एएमडी के साथ यह समझौता ज्ञापन खनिज अन्वेषण में हमारी क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देगा, विशेष रूप से यूरेनियम के लिए, जो देश के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण है।

इस अवसर पर श्री धीरज पांडे, निदेशक, एएमडी ने अपना विचार साझा करते हुए कहा कि सीएसआईआर-एनजीआरआई के साथ साझेदारी करने से हमें अत्याधुनिक भूभौतिकीय सर्वेक्षण प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने में मदद मिलेगी, जिससे हमारी अन्वेषण गतिविधियों की सटीकता और दक्षता बढ़ेगी।

सीएसआईआर-एनजीआरआई और एएमडी के बीच सहयोग से भारत के खनिज अन्वेषण में उन्नत वैज्ञानिक पद्धतियों को आगे लाने, नए यूरेनियम संसाधनों की खोज करने और राष्ट्र की ऊर्जा आत्मनिर्भरता में योगदान देने की संभावना है।

सीएसआईआर-एनएमएल ने भावी धातुकर्म विज्ञानियों के लिए बीटीटीडी-2024 का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनएमएल), जमशेदपुर ने मैटेरियल्स एंड मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग पर राष्ट्रीय स्तर की एक छात्र संगोष्ठी, "बिहाइंड दि टीचर्स डेस्क" (बीटीटीडी-2024), का आयोजन किया । इस संगोष्ठी का आयोजन भारतीय धातु संस्थान (आईआईएम) जमशेदपुर चैप्टर द्वारा सीएसआईआर-एनएमएल, टाटा स्टील लिमिटेड, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जमशेदपुर और एकैडमी ऑफ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव रिसर्च (एसीएसआईआर) के संयुक्त तत्वाधन में 19-21 जून, 2024 के दौरान किया गया।

डॉ. एन.सी. मुर्मू, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय यांत्रिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुर ने मुख्य अतिथि के रूप इस संगोष्ठी का उद्घाटन ने किया। इस अवसर पर डॉ. संदीप घोष चौधरी, निदेशक सीएसआईआर-एनएमएल, जमशेदपुर; प्रो. अशोक कुमार, अध्यक्ष, आईआईएम जमशेदपुर; डॉ. चिरदीप घोष; अध्यक्ष, बीटीटीडी कार्यक्रम और डॉ. अम्मासी ए. संयोजक, बीटीटीडी-2024 उपस्थित थे। संगोष्ठी स्मारिका के विमोचन के साथ औपचारिक रूप से इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

इस संगोष्ठी का उद्देश्य इच्छुक धातुकर्म विशेषज्ञों को उद्योग, अनुसंधान और विकास प्रयोगशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों के विशेषज्ञों के साथ जुड़ने का मंच प्रदान करना था। इस संगोष्ठी ने छात्र प्रतिभागियों को अपने ज्ञान को अद्यतन करने और धातुकर्म और सामग्री प्रौद्योगिकी में अपनी शैक्षणिक उपलब्धियों, नवीन विचारों और अनुसंधान को साझा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया।

2011 में अपनी स्थापना के बाद से, "बिहाइंड दि टीचर्स डेस्क" पूरे भारत में छात्रों के लिए एक प्रमुख कार्यक्रम बन गया है। डॉ. संदीप घोष चौधरी ने अतिथि प्रतिनिधियों और वक्ताओं का स्वागत किया तथा राष्ट्रीय विकास में धातुओं, सामग्रियों और खनिजों की महत्वपूर्ण भूमिका और इसमें छात्रों की भागीदारी के महत्व पर बल दिया।

डॉ. एन.सी. मुर्मू ने अपने संबोधन में धातुकर्म और पदार्थ विज्ञान में छात्रों के बीच रुचि बढ़ाने के लिए संगोष्ठी की प्रशंसा की। प्रो. अशोक कुमार ने आईआईएम जमशेदपुर चैप्टर की गतिविधियों पर प्रकाश डाला, जिसमें भारत में पेशेवरों के बीच

धातुकर्म को लोकप्रिय बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

डॉ. चिरदीप घोष ने इस कार्यक्रम पर विस्तार से प्रकाश डाला जिसमें बताया गया कि देश भर के 28 अभियांत्रिकी महाविद्यालयों और अन्य संस्थानों से लगभग 100 से अधिक छात्रों और विशेषज्ञों ने प्रतिभागिता की। इस कार्यक्रम में तीन समानांतर सत्रों में 57 तकनीकी शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। संगोष्ठी में मेटलर्जिकल क्विज़ और औद्योगिक दौरे को भी शामिल किया गया। इसमें भाग लेने वाले संस्थानों में प्रमुख रूप से आईआईटी खड़गपुर, आईआईटी जम्मू, आईआईटी इंदौर, आईआईटी (आईएसएम) धनबाद, एमजीआईटी हैदराबाद, वीएनआईटी नागपुर, एनआईटी दुर्गापुर, एनआईटी भोपाल, एमएएनआईटी भोपाल, बिट्स पिलानी , एनआईएएमटी हटिया रांची, आईआईईएसटी शिबपुर, एनआईटी जमशेदपुर और कई अन्य शामिल हुए।

डॉ. अम्मासी ए. ने सेमिनार को सफल बनाने में मुख्य अतिथि, प्रतिभागियों और आयोजन समिति के प्रयासों के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने डॉ. संदीप घोष चौधरी तथा सलाहकार एवं आयोजन समितियों को उनके निरंतर सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

संगोष्ठी में डॉ. अतनु पाल, मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी, टीएसएल और इंद्रनील चट्टोराज, सहायक प्रोफेसर, आईआईटी जोधपुर एवं पूर्व निदेशक, सीएसआईआर एनएमएल; डॉ. पी.के. बनर्जी, प्रसिद्ध वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सिंफर, धनबाद, डॉ. एस.के. सतपति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड और डॉ. एस. शिवप्रसाद, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर - एनएमएल जमशेदपुर ने अपने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किए। यह संगोष्ठी सभी प्रतिभागियों के लिए एक समृद्ध अनुभव था।

यह संगोष्ठी सामग्री एवं धातुकर्म अभियांत्रिकी के क्षेत्र में नवाचार एवं अनुसंधान को गति प्रदान करेगा जो अंततः राष्ट्र निर्माण के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

सीएसआईआर-एनआईओ ने विश्व महासागर दिवस मनाया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान एवं इसके क्षेत्रीय केन्द्रों पर विश्व महासागर दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्व महासागर दिवस प्रतिवर्ष 08 जून को अंतराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। इस दिवस की अवधारणा को प्रस्तावित करने का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर संधारणीय विकास लक्ष्यों को क्रियान्वित करने के लिए समर्थन प्रदान करना तथा समुद्र एवं इसके संसाधनों के संधारणीय प्रबंधन के प्रति आम जनता की अभिरुचि को बढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना था।

इस अवसर पर डॉ. सुनील कुमार सिंह, निदेशक, सीएसआईआर-एनआईओ तथा डॉ. रमेश कुमार, सेवानिवृत्त, मुख्य वैज्ञानिक एवं वर्तमान अध्यक्ष, ओएसआई-गोवा चैप्टर ने समुद्र की महत्ता पर प्रकाश डाला और इसे स्वच्छ बनाए रखने की आवश्यकता पर विशेष ज़ोर दिया। इस अवसर पर करंजलेम समुद्री तट पर साफ-सफाई का कार्य किया गया। सीएसआईआर-एनआईओ के विशाखापट्टनम क्षेत्रीय केंद्र पर स्टाफ सदस्य, छात्र तथा स्वयंसेवकों ने पूरी निष्ठा के साथ रामा कृष्णा समुद्री तट के सौंदर्य एवं स्वच्छतापूर्ण वातावरण को बनाए रखने लिए साफ-सफाई का कार्य किया। यह कार्यक्रम पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, ओशन

सोसायटी ऑफ इंडिया और आंध्रा विश्व विद्यालय के संयुक्त प्रयास से आयोजित किया गया। इस अवसर पर सीएसआईआर-एनआईओ के कोच्चि क्षेत्रीय केंद्र पर मुनाम्बम समुद्री तट से अपशिष्ट प्लास्टिक को एकत्रित करने एवं तट स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का अभियान चलाया गया।

सीएसआईआर-आईआईआईएम ने अरोमा उत्पादों के लिए एरोमेटिक एंड एलाइड कैमिकल्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू और एरोमेटिक एंड एलाइड कैमिकल्स, बरेली ने जम्मू एवं कश्मीर क्षेत्र की चुनिंदा सुगंधित फसलों के मूल्य संवर्धन और नवीन सुगंधित उत्पादों के संयुक्त विकास पर सहयोग करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओए) पर हस्ताक्षर किए हैं। इन दो प्रतिष्ठित संगठनों के बीच यह समझौता ज्ञापन सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू में 15 जून 2024 को आयोजित एक कार्यक्रम में सम्पन्न हुआ ।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य प्राकृतिक उत्पाद अनुसंधान में सीएसआईआर-आईआईआईएम की विशेषज्ञता और सुगंधित तेलों के प्रसंस्करण में सुगंधित और संबद्ध रसायनों की दक्षता का लाभ उठाकर उच्च मूल्य वाले सुगंधित उत्पाद विकसित करना है जो बाजार की मांगों को पूरा करें और कृषि संधारणीयता को संवर्धित करें। यह सहयोगपूर्ण प्रयास जम्मू-कश्मीर के स्थानीय क्षेत्र के किसानों और सुगंधित उत्पादों से जुड़े उद्योगों के बीच घनिष्ठ संबंध विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के पहले से ही तेजी से बढ़ते कृषि-स्टार्टअप और कृषि -अर्थव्यवस्था के प्रोत्साहन को और अधिक गति मिलेगी। इस अवसर पर डॉ. ज़बीर अहमद, निदेशक सीएसआईआर-आईआईआईएम ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सहयोगपूर्ण प्रयास वैज्ञानिक ज्ञान को प्रभावशाली अनुप्रयोगों में बदलने की सीएसआईआर-आईआईआईएम की प्रतिबद्धता के अनुरूप है। उन्होंने कहा कि एरोमैटिक एंड एलाइड कैमिकल्स उद्योग की अंतर्दृष्टि के साथ अपनी शोध शक्तियों को जोड़कर, हमारा लक्ष्य आर्थिक और पर्यावरणीय लाभों के लिए सुगंधित संसाधनों के उपयोग के लिए एक नया मार्ग बनाना है। उन्होंने उल्लेख किया कि इस तरह के उद्यम से प्रगतिशील किसानों को मूल्य संवर्धन, उत्पाद विकास और बाजार से जुड़ने में भी काफी मदद मिलेगी।

एरोमेटिक एंड एलाइड कैमिकल्स (एएसी) जो एरोमेटिक उत्पादों में अपने अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है, इस सहयोग को अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करने और एरोमेटिक उद्योग के विकास में योगदान करने के लिए एक रणनीतिक अवसर के रूप में देखता है। एरोमेटिक एंड एलाइड केमिकल्स के एम.डी. श्री गौरव मित्तल ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम सीएसआईआर-आईआईआईएम के साथ साझेदारी को लेकर बहुत उत्साहित हैं, जो अपनी वैज्ञानिक दृढ़ता और नवाचार के लिए प्रसिद्ध एक प्रमुख शोध संस्थान है। उन्होंने कहा कि हम एक साथ मिलकर, अत्याधुनिक एरोमैटिक उत्पाद विकसित करने की आशा करते हैं जो गुणवत्ता और स्थिरता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने में सफल होंगे।

इस समझौता ज्ञापन कार्यक्रम में दोनों संगठनों के शीर्ष अधिकारियों और शोधकर्ताओं ने भाग लिया, दोनों संस्थाओं ने सुगंधित उत्पादों से जुड़े उद्योग में वैज्ञानिक सहयोग एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अपनी पारस्परिक प्रतिबद्धताओं को रेखांकित किया। इस कार्यक्रम का आयोजन सीएसआईआर-आईआईआईएम अरोमा मिशन टीम द्वारा किया गया। डॉ. अब्दुल रहीम, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, आरएमबीडी एंड आईएसटी, और बीडीजी के नेतृत्व में कार्यक्रम का सफल संचालन किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में नोडल वैज्ञानिक क्रमश: डॉ. सुफला गुप्ता और डॉ. लव शर्मा ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सीएसआईआर-सीएफटीआरआई ने विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया

सीएसआईआर-केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सीएफटीआरआई), मैसूर ने विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों के लिए एक प्रशिक्षण सह- प्रदर्शनी कार्यक्रम का आयोजन किया । इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. राजेश्वर एस. मैचे, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, खाद्य पैकेजिंग प्रौद्योगिकी विभाग के द्वारा किया गया। उन्होंने इस अवसर पर विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस 2024 के महत्व, समाज के लिए इसके लाभों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस दिवस के बारे में जागरूकता बढ़ाने में छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने सभी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में छात्रों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस-2024 का थीम 'खाद्य सुरक्षा: अप्रत्याशित स्थिति के लिए तैयारी है।

Megazine Post No. DL(DS)-69/MP/2023-24-25
RNI-DELHI/2013/52141

संस्थान ने कहा कि इस वर्ष का थीम खाद्य सुरक्षा घटनाओं के लिए तैयार रहने के महत्व पर जोर देता है, चाहे वे कितनी भी गंभीर क्यों न हों।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस की घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दिसंबर 2018 में की गई थी। इस दिवस को पहली बार 7 जून 2019 को मनाया गया था। इस दिवस का उद्देश्य खाद्य सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना और खाद्य जनित जोखिमों को रोकने, उनके अन्वेषण और उन्हें प्रबंधित करने में सहयोग प्रदान करने वाले कार्यों को प्रोत्साहित करना है।

सीएसआईआर-केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मैसूर ने खाद्य सुरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता फैलाने के लिए छात्रों, शोधार्थियो तथा विभिन्न हितधारकों के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ. पर्वतम गिरिधर, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, खाद्य सुरक्षा एवं विश्लेषणात्मक गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला (एफएसएक्यूसीएल), सीएफटीआरआई ने विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस मनाने के उद्देश्य और महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की तथा खाद्य आपूर्ति की सुरक्षा सुनिश्चित करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि खाद्य सुरक्षा सभी का काम है और खाद्य सुरक्षा एक साझा जिम्मेदारी है।

डॉ. गिरिधर की देखरेख में सीएसआईआर -सीएफटीआरआई के खाद्य सुरक्षा विभाग और विश्लेषणात्मक गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला के समन्वयन में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। छात्रों को खाद्य सुरक्षा के दो विशिष्ट पहलुओं के बारे में बताया गया। सीएसआईआर-सीएफटीआरआई के वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, विद्वानों और शोध छात्रों ने खाद्य तेलों, मसाला उत्पादों, मिठाइयों, दूध, शहद आदि में मिलावट की पहचान पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान खाद्य सुरक्षा हेतु प्रयोगशालाओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले विश्लेषणात्मक उपकरणों का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर खाद्य स्वच्छता और सूक्ष्मजीव सुरक्षा पर भी प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में खाद्य विनियमन, खाद्य लेबलिंग और पोषण संबंधी लेबलिंग, खाद्य परिवर्धन और संदूषकों पर पोस्टर भी प्रदर्शित किए गए।

कार्यक्रम में विभिन्न कॉलेजों के 200 से अधिक छात्रों ने भाग लिया, जिसमें गवर्नमेंट पीयू कॉलेज, वोंटिकोप्पल, मैसूर के छात्र, स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ से मास्टर इन पब्लिक हेल्थ के पोस्टग्रेजुएट छात्र, जेएसएस एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च, मैसूर और बायोटेक्नोलॉजी विभाग के यूजी और पीजी के छात्र, महारानी लक्ष्मी अम्मानी कॉलेज फॉर विमेन (स्वायत्त), बेंगलुरु, डॉ. एनजीपी आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, कोयंबटूर और गुजरात स्टेट बायोटेक्नोलॉजी मिशन, गुजरात के यूजी और पीजी छात्र शामिल थे। कार्यक्रत के अन्त में छात्रों को भागीदारी प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए गए।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/ अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों /कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार

सम्पादक : शुभदा कपिल; सह सम्पादक : अनिरूद्ध तिवारी; प्रोडक्शन : अश्वनी कुमार ब्राह्मी
फोन : 25841769, 25846304–7/371; फैक्स : 25847062; ईमेल : csirsamachar@niscpr.res.in;
वेबसाइट : http://www.niscpr.res.in
बिक्री एवं वितरण अधिकारी, निस्पर; ईमेल : sales@niscpr.res.in; फोन : 011-25843359
वार्षिक सदस्यता: ₹ 500/– एक अंक: ₹ 50/–

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री मुकेश अम्बादास पुंड द्वारा स्वामी राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर)
डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली–110012 से प्रकाशित एवं मुद्रित

DELHIN / 2013/52141